C-3 Learning and Teaching
Unit -1

Page No.
Date 20/04/2020

अधिगम

अधिगम एंव अधिगम प्रकिया का बोध :-

नवजात शिशु जन्म के समय असहाय अवस्था में रहता है, वह दूसरो पर निर्भर रहता है, कालान्तर में वह शिशु अनेक चीज सीख जाता है, सीखने की प्रकिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। अधिगम अथवा सीखना प्राणियों के एक जन्मजात गुण है।

अधिगम का अर्थ :-

अधिगम किसी स्थिति के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया है, एक बालक जलती हुई मोमबत्ती को छु लेने से वह जल जाता है, उसके अन्दर यह अनुभव उत्पन्न हो जाता है, कि यदि हम जलती हुई मोमबत्ती को छुअेंगे, तो जल जायेगें। दूसरी बार जलती हुई मोमबत्ती से वह दूर हट जाता है, उसके अन्दर एक सीख उत्पन्न हो जाती है, और वह सीख जाता है, कि अगर मैं हाथ लगाऊँगा, तो जल जाऊँगा। इस प्रकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष माध्यमों के साथ व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होने लगता है। ये अधिगम कहलाता है।

अधिगम की परिभाषाएं

i) गेट्स के अनुसार :-

"अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम कहलाता है।"

ii) स्किनर के अनुसार :-

"सीखना व्यवहार में (निरंतर) उत्तोत्तर सामंजस्य की प्रकिया है।"

Scanned with CamScanner

वुडवर्थ के अनुसार :-

"नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं के प्राप्त करने की प्रक्रिया ही अधिगम कहलाती है।"

क्रो एंव क्रो के अनुसार :-

"अधिगम आदतों एंव ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

गिलफोर्ड के अनुसार :-

"व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन ही अधिगम है।"

ब्लेयर, जोन्स एंव सिम्पसन के अनुसार :-

व्यवहार में कोई परिवर्तन जो अनुभवों का परिणाम है, और उसके फलस्वरूप व्यक्ति आने वाली स्थितियों का निम्न प्रकार से सामना करता है, अधिगम कहलाता है।

अधिगम की प्रकृति

(1) अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है।

(2) अधिगम व्यक्ति की क्रियाशीलता पर निर्भर करता है।

(3) अधिगम विकास की प्रक्रिया है; जहाँ व्यक्ति को स्वप्रयास करना पड़ता है।

(4) अधिगम व्यक्ति के वातावरण के अनुकूल व्यक्ति में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(5) परिवर्तन लाता है। ये परिवर्तन स्थायी एवं अस्थायी दोनों होता है।

(6.) अधिगम साकारात्मक एवं नाकारात्मक दोनों हो सकता है।

(7.) अधिगम व्यवहार में परिवर्तन की मानवीय प्रक्रिया है।

(8.) अधिगम व्यक्ति को आवश्यक समायोजन और ग्राहता के लिए तैयार किया जाता है।

(9) अधिगम एक सहज क्रिया नहीं है।

(10.) परिपक्वता, थकान, बिमारी, नशा आदि के कारण व्यवहार में परिवर्तन का अधिगम से कोई संबंध नहीं है।

अधिगम की विशेषता

(I) अधिगम में परिवर्तन है।

(II) अधिगम सम्पूर्ण जीवन चलता है।

(III) सीखना विकास है।

(IV) सीखना अनुकूलन है।

(V) सीखना सार्वभौमिक है।

(VI) सीखना नया कार्य करना है।

(VII) सीखना अनुभव का संगठन है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(vii) जीवन उद्देश्यपूर्ण है।

जीवन विवेकपूर्ण है।

जीवन सक्रियता है।

जीवन व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है।

जीवन वातावरण की उपज है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

... ... का उपज है।

Date 21/04/2020

अधिगम के प्रकार :— अधिगम के तीन प्रकार होते हैं।

(1) संवेदनगति सीखना
(2) गामक सीखना
(3) बौद्धिक सीखना

(1) संवेदनगति सीखना :— संवेदन गति की प्रक्रिया में कौशल अर्जन संबंधी ज्ञान आता है। इसमें व्यक्ति द्वारा विभिन्न प्रकार की कुशलता अर्जित किया जाता है। जैसे - तैरना, बाइक चलाना, टाईपिंग करना, चित्र बनाना इत्यादि।

गामक सीखना :— इस प्रकार के सीखने की प्रक्रिया में विकास की प्रारंभिक अवस्था, शरीर में संचालन एंव गति पर नियंत्रण करना सीखाती है।

Page No. ....
Date ....

बौद्धिक सीखना :-

इसके अंतर्गत ज्ञानोपार्जन संबंधित समस्त क्रियाएं आती है।

(i) प्रत्यक्षीकरण (iii) साहचर्य सीखना
(ii) सम्प्रत्यात्मक सीखना (iv) रसानुभूति परक

प्रत्यक्षीकरण :-

इस प्रकार के सीखने में व्यक्तियों इन्द्रियों की सहायता से पदार्थ एवं घटनाओं तथा तथ्यों की जानकारी की क्रिया करती है। यह एक मानसिक क्रिया है, इनमें निम्न क्रिया सम्मिलित है। जैसे - किसी उत्तेजक का उपस्थित होना, उत्तेजक के ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करना, उत्तेजक अनुभव में मस्तिष्क में स्थित बोध केन्द्र तक पहुँचाता है।

सम्प्रत्यात्मक सीखना :-

इस प्रकार के सीखने में व्यक्ति को तर्क, कल्पना और चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। सम्प्रत्यय निर्माण प्रत्यक्षीकरण के बाद विभिन्न वस्तु को प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति उसके गुणों का विश्लेषण करता है।

सहचार्य सीखना :-

इस प्रकार के सीखने में स्मृति का महत्वपूर्ण स्थान होता है, जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों या तथ्यों में पूर्ण अथवा आंशिक रूप से समानता होती है। या असमानता होती है, तो एक वस्तु व्यक्ति अथवा तथ्य के स्मरण से दूसरे का स्मरण स्वयं हो जाता है।

रसानुभूति परक :-

इस प्रकार के सीखने में बालक और व्यक्ति

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

संवेदनात्मक अनुभूति से सीखते हैं, और भावात्मक घटना या परिदृश्य से अनुभूति होकर बाकी गुणों को सीखता है।

अधिगम का उद्देश्य एवं महत्व

(i) व्यवहार में परिवर्तन :—

सीखना व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति खुद भी सीखता है, उसके बाद उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है, इसके द्वारा व्यक्ति से वांछित व्यवहार परिवर्तन भी किया जाता है। सीखने की प्रक्रिया में व्यक्ति के व्यवहार में उसके तीनों पक्षों, ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक में परिवर्तन लाया जा सकता है।

(ii) शिक्षण अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति :—

सीखने की प्रक्रिया में बालक के लिए निर्धारित शिक्षण अधिगम के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। इस परिवर्तन प्रक्रिया में बालक के शिक्षण अधिगम परिस्थितियों में परिवर्तन लाना तथा परिवर्तनों में बालकों के द्वारा ज्ञान कौशल उपयोग, अनुप्रयोग अभिवृत्तियों एवं अभिरुचियों को सीखता है।

ज्ञान, आदतों, कौशल, अभिवृत्ति एवं मूल्यों का अधिगम

ज्ञान का अधिगम :—

(i) ज्ञान (ii) बोध
(iii) प्रयोग (iv) विश्लेषण
(v) संश्लेषण (vi) मूल्यांकन

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Page No. ______
Date ______

ज्ञान :—

ज्ञान से हम विशेषताओं का ज्ञान, शब्दावली का ज्ञान विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान परम्पराओं का ज्ञान प्रचलन तथा पद्धति सार्वभौमिकता तथा समान्यीकरण संरचनाओं को ज्ञान कहते हैं।

बोध :—

बोध से हम अनुवाद, यथार्थपन एवं बहिर्वेशन आदि क्रियाओं को बालकों द्वारा करवाते हैं, जिससे हमें ज्ञान की समझ बोध उत्पन्न होता है।

प्रयोग :—

इस स्तर पर बालक सीखने और समझने का ज्ञान का वास्तविक परिस्थितियों में प्रयोग करता है। इसमें हम तथ्यों या प्रत्ययों आदि का वास्तविक परिस्थितियों में सामान्यीकरण कराते हैं।

विश्लेषण :—

इस स्तर पर बालक पूर्व में सीखे हुए समझे हुए तथ्यों तथा प्रत्ययों का विश्लेषण करना सीखता है। इसमें प्रायः शिक्षक द्वारा इन तथ्यों या विश्लेषण का विश्लेषण करके व्यवस्थित सिद्धांत को स्थापित करता है।

संश्लेषण :—

इसमें तथ्यों को नयी संरचना में संगठित किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप वातावरण में उपस्थित किसी समस्या का समाधान या योजना का निर्माण करना बालक सीखता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

मूल्यांकन :—

इस स्तर पर बालक सीखे गये सामग्री गये रूप ज्ञान का विश्लेषण व संश्लेषण करके मूल्यांकन करता है, तथा विशेष ज्ञान को ग्रहण करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

C-3
Learning and Teaching

Page No.
Date 22/04/2020

Unit - Ist

सीखने का स्तर

(i) तथ्य
(ii) सूचना
(iii) ज्ञान प्राप्त करना
(iv) बोध
(v) प्रज्ञान

I. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त :—

वर्गीकरण :—

1) संवेदी पेशीय अवस्था — जन्म से 2 वर्ष का
2) प्राक् संक्रियात्मक अवस्था — 2 - 7 वर्ष का
3) ठोस " " — 7 - 12 वर्ष का
4) औपचारिक " " — प्रारंभ से व्यस्क अवस्था तक

(1) संवेदी पेशीय अवस्था :— इसमें 6 अवस्थाएँ होती है।

(i) जन्म से 30 ~~माह~~ दिन तक
(ii) 1 माह से 4 माह तक
(iii) 4 माह से 8 माह तक
(iv) 8 माह से 12 माह तक
(v) 12 माह से 18 माह तक
(vi) 18 माह से 24 माह तक

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त :—

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या करने के लिए संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में विभक्त किया है।

Scanned with CamScanner

(1) संवेदी पेशीय अवस्था :—

यह अवस्था जन्म से 2 वर्ष तक चलती है, इस अवस्था में शिशुओं का संज्ञानात्मक विकास तथा 6 उपअवस्थाओं से होकर गुजरती है।

(a) पहली अवस्था (प्रतिवर्त क्रियाओं की अवस्था)

जन्म से 30 दिन तक यह अवस्था होती है। इन अवस्थाओं में बालक मात्र प्रतिवर्त क्रियाएँ करता है। इस प्रतिवर्त क्रियाओं में चूसने का प्रतिवर्त सबसे प्रबल होता है।

(b) प्रमुख वृत्तीय क्रियाओं की अवस्था :—

यह अवस्था 1 से 4 माह तक की अवधि तक होता है, इस अवस्था में शिशुओं की प्रतिबद्ध क्रियाएँ उनकी अनुभूतियों द्वारा कुछ हद तक परिवर्तित होती है, और दोहराई जाती है, एक-दूसरे के साथ समन्वित होती है।

गौड़ वृत्तीय क्रियाओं की अवस्था :—

यह अवस्था 4-8 माह तक की अवधि तक होती है। इस अवस्था में शिशुओं अपने द्वारा किये गये कार्य को उलटता और पलटता है। अथवा दौड़ता-दौड़ता है, तथा घुटने के बल पर चलने की कोशिश करता है। जैसे - शरीर प्रतिवर्त क्रियाओं को दोहराते रहती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समन्वय की अवस्था :—

यह अवस्था 8-12 माह की अवधि तक चलती है, इस अवस्था में बालक उद्देश्य या लक्ष्य को प्रारंभ कर देता है।

पाँचवी अवस्था :—

यह अवस्था में 12-18 माह तक की अवधि तक होता है, इस अवस्था में बालक के गुणों का विकास, प्रयास तथा गलतियों को सुधारने का प्रयास करता है।

(4) मानसिक संयोगों तथा नये साधनों की खोज की अवस्था

यह अंतिम अवस्था है, जो 18-24 माह की अवधि तक होता है। यह अवस्था है, जिसमें बालक वस्तुओं के बारे में चिंतन करना प्रारंभ कर देता है।

(2.) प्राक् संक्रियात्मक अवस्था :—

संज्ञानात्मक विकास की अवस्था 7 वर्ष की होती है, यह प्रारंभिक बाल्यावस्था होती है इस अवस्था में पियाजे ने जो अवस्थाओं में विभक्त किया है।

(i) संकेत (ii) चिन्ह

जैसे - बालक अपनी माँ की आवाज सुनता है, तब उसके मन में उसकी प्रतिमा जाग उठती है, तो संकेत का उदाहरण है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(3) (3) ठोस संक्रियात्मक अवस्था

यह अवस्था 7 वर्ष से प्रारंभ होकर 12 वर्ष तक चलती है, इसकी विशेषता यह है, कि इसमें बालक वस्तु को ठोस रूप से पहचानना शुरू कर देता है।

(4) (4) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

यह अवस्था 11 वर्ष से प्रारंभ होकर प्रौढ़ अवस्था तक चलती है, इस अवस्था में किशोर का चिंतन होता है, तथा प्रभावित होता है। और चिंतन करके सूची क्रमबद्धता लाता है।

Scanned with CamScanner

C-3

Learning and Teaching

unit-4

24/04/2020

सामाजिकरण का अर्थ :-

जब बालक जन्म लेता है, तब वह रक्त मांस हड्डी आदि का एक जीवन मात्र पुतला होता है। उस समय न तो सामाजिक विरोध करता है, न गुण होता है, वह थोड़े समय से प्राणी शास्त्री गुणो वाला एक जीवित प्राणी है। सामाजिक एवं संस्कृति के बीच पलता हुआ बालक सामाजिक गुणो में बदल जाता है। सामाजिक संस्कृति विरासत का सक्रिय भागीदारी बनाता है, और व्यक्ति का विकास करता है।

सामाजिकरण की परिभाषा :-

सामाजिक वह क्रिया है, जिसके द्वारा बच्चा संस्कृति विशेषताओं का आत्म एवं व्यक्तित्व प्रकट करता है।

जॉनसन के अनुसार :-

"सामाजिकरण एक प्रकार का सीखना है, जो सीखने वाले सामाजिक कार्य करने के योग्य बनाता है।"

वॉटसन के अनुसार :-

"सामाजिकरण एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।"

सोरोकिन के अनुसार :-

"सामाजिकरण संस्कृति तथा वैचारिक कारकों के अंतरीकरण की प्रक्रिया है।"

बालक के सामाजिकरण की प्रक्रिया :—

बालक के सामाजिकरण की प्रक्रिया जन्म के कुछ दिन में जब जन्म के बाद से ही बालक अपने मूल प्रवृति के कारण भूख-प्यास लगने लगती है। हाथ पैर पटकने लगता है। जब माता उसको दूध पिलाने लगती है, तब वह चुप हो जाता है। बालक यह सीख जाता है, कि यदि भूख लगता है, तो रोना शुरू कर देता है। और उसकी माँ यह समझ लेती है, कि बच्चा भूखा है, और यह निश्चित समय निर्धारित कर लेता है, परिवार के सदस्य के रूप में वह परिवार के अन्य सदस्यों के अंत: क्रियाएँ संबंध कायम रखता है। और उसके व्यवहार का अनुकरण करने लगता है। अनुकरण सामाजिकरण की प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण साधन एंव तथ्य है। बालक अनुकरण करने लगता है। अनुकरण सामाजिकरण की प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण साधन एंव प्रमुख तथ्य है। बालक अनुकरण के आधार पर दूसरे के व्यवहार को सरलता से सीख जाता है। धीरे-धीरे जैसा उनका विकास होना शुरू हो जाता है, वह समाज का अनुकरण करने लगता है, और सामाजिक बन जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सामाजिकरण :—

सामाजिकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति सामाजिक व्यवहार को तो स्वयं सीखता है, इसके परिजनों द्वारा सीखा जा सकता है। समाज अपने संस्कृति के आधार पर सदस्यों के व्यवहार को निश्चित दिशा प्रदान कर देता है, और अपनी इच्छाओं को अपने माता-पिता तक रखता है। जब बालक समाज तथा अपने माता-पिता के बातों को मानता है, तो वह जीवन में सफल बनता है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सामाजिकरण के कारण :—

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सामाजिकरण के निम्न कारण है :—

(i) भाषा	(v) सहानुभूति
(ii) संस्कृति	(vi) प्रशंसा एवं निंदा
(iii) अनुकरण	(vii) स्वास्थ्य
(iv) सुझाव	(viii) शारीरिक बनावट

शिक्षक के वृत्ति पहचान :— (दक्ष, लक्ष्य, कार्य)

एक अच्छे अध्यापक में अनेक गुण होते हैं। अध्यापक को आदर्शवादी व्यवहार परक होनी चाहिए और जीवनशैली में आदर्शवादी होना, समय का पाबंद आदर्शवादी पहचान होना, बातचीत करने का ढंग होना। नैतिकता का पालन करने वाला हो, आध्यात्मिक करने में परिपूर्ण हो, सत्यवादी छात्र-छात्राओं का हितैषी हो, सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने वाला हो, कल्याणकारी भावनाओं से ओत-प्रोत हो।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

* आदर्श अध्यापक की संकलपना :— निम्न तीन संकलपनाएँ है।

(i) लक्ष्य परक क्रियाएँ
(ii) दक्षता " "
(3) कार्य " "

(i) लक्ष्य परक क्रियाएँ :— किसी भी अध्यापक का लक्ष्य हो सकता है, भिन्न-भिन्न अध्यापकों को अलग-अलग, एक अध्यापक के अनेक लक्ष्य हो सकते है। लक्ष्य परक उद्देश्यों से तात्पर्य है, वे उद्देश्य जो अध्यापक को अपने व्यवसाय से संबंधित जुड़ा हो।

(ii) दक्षता परक क्रियाएँ :— शिक्षक केवल शिक्षकी दुकान खोलने से नहीं होता, केवल पढ़ाने तथा डीक्षी करने से नहीं होता है। अच्छा शिक्षक वही है जो अपने छात्रों को विषय में दक्षता प्रदान करता है, इसके लिए स्वंय विषय पर परम्परागत होना चाहिए।

(iii) कार्य परक क्रियाएँ :— एक अध्यापक कक्षा तक नहीं होता। इसका नियोजन के प्रति कुछ कर्तव्य होना चाहिए। विद्यालय संबंधी नीति निर्धारण में सहयोग, विद्यालय संस्कृति को कायम रखना। समय पाबंदी बनाए रखना विद्यालय के निर्माण कार्य है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(i) अपलावन गुण के अनुसार :—

(a) वार्तालाप में निपुणता
(b) खुशमिजाज
(c) प्रसन्नता का गुण
(d) परवाह करना अर्थात लापरवाह न होना
(e) सजग रहना तथा सजगता
(f) अग्रिम वादी रहना।

दूसरों के हित के लिए तैयार करना।

(g) दूसरों की भलाई के लिए सोचना
" से हमदर्दी रखना
समझदारी
निःस्वार्थ कार्य करना।
धैर्य धारण रखना।

संवेगात्मक स्थिरता :—

(9) जीवन की समस्याओं की वास्तविकताओं को समझना।
भावनात्मक परेशानियों से युक्त होना।
स्थिरता
शांत एवं आत्मविश्वास
आत्म नियंत्रण।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner